

## श्री हनुमान चालीसा (Hanuman Chalisa Lyrics in Hindi)

----- दोहा -----

श्रीगुरु-चरन-सरोज-रज  
निज-मन-मुकुर सुधारि ।  
बरनउँ रघुबर-बिमल-जस  
जो दायक फल चारि ॥

बुद्धि-हीन तनु जानिकै  
सुमिरौं पवनकुमार ।  
बल बुधि बिद्या देहु मोहिं  
हरहु कलेश बिकार ॥

----- चौपाई -----

जय हनुमान ज्ञान-गुण-सागर ।  
जय कपीश तिहुँ लोक उजागर ॥ १ ॥

राम-दूत अतुलित-बल-धामा ।  
अंजनिपुत्र - पवनसुत - नामा ॥ २ ॥

महाबीर बिक्रम बजरंगी ।  
कुमति-निवार सुमति के संगी ॥ ३ ॥

कंचन-बरन बिराज सुबेसा ।  
कानन कुंडल कुंचित केसा ॥ ४ ॥

हाथ बज्र अरु ध्वजा बिराजै ।  
काँधे मूँज-जनेऊ छाजै ॥ ५ ॥

शंकर स्वयं केसरीनंदन ।  
तेज प्रताप महा जग-बंदन ॥ ६ ॥

बिद्यावान गुणी अति चातुर ।  
राम-काज करिबे को आतुर ॥ ७ ॥

प्रभु-चरित्र सुनिबे को रसिया ।  
राम-लखन-सीता-मन-बसिया ॥ ८ ॥

सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा ।  
बिकट रूप धरि लंक जरावा ॥ ९ ॥

भीम रूप धरि असुर सँहारे ।  
रामचंद्र के काज सँवारे ॥ १० ॥

लाय सँजीवनि लखन जियाये ।  
श्रीरघुबीर हरषि उर लाये ॥ ११ ॥

रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई ।  
तुम मम प्रिय भरतहिं सम भाई ॥ १२ ॥

सहसबदन तुम्हरो जस गावैं ।  
अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ॥ १३ ॥

सनकादिक ब्रह्मादि मुनीशा ।  
नारद सारद सहित अहीशा ॥ १४ ॥

जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते ।  
कबि कोबिद कहि सकैं कहाँ ते ॥ १५ ॥

तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा ।  
राम मिलाय राज-पद दीन्हा ॥ १६ ॥

तुम्हरो मंत्र बिभीषन माना ।  
लंकेश्वर भए सब जग जाना ॥ १७ ॥

जुग सहस्र जोजन पर भानू ।  
लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥ १८ ॥

प्रभु-मुद्रिका मेलि मुख माहीं ।  
जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं ॥ १९ ॥

दुर्गम काज जगत के जे ते ।  
सुगम अनुग्रह तुम्हरे ते ते ॥ २० ॥

राम-दुआरे तुम रखवारे ।  
होत न आज्ञा बिनु पैसारे ॥ २१ ॥

सब सुख लहहिं तुम्हारी शरना ।  
तुम रक्षक काहू को डर ना ॥ २२ ॥

आपन तेज सम्हारो आपे ।  
तीनों लोक हाँक ते काँपे ॥ २३ ॥

भूत पिशाच निकट नहिं आवै ।  
महाबीर जब नाम सुनावै ॥ २४ ॥

नासै रोग हरै सब पीरा ।  
जपत निरंतर हनुमत बीरा ॥ २५ ॥

संकट तें हनुमान छुड़ावै ।  
मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ॥ २६ ॥

सब-पर राम राय-सिरताजा ।  
तिन के काज सकल तुम साजा ॥ २७ ॥

और मनोरथ जो कोइ लावै ।  
तासु अमित जीवन फल पावै ॥ २८ ॥

चारिउ जुग परताप तुम्हारा ।  
है परसिद्ध जगत-उजियारा ॥ २९ ॥

साधु संत के तुम रखवारे ।  
असुर-निकंदन राम-दुलारे ॥ ३० ॥

अष्ट सिद्धि नव निधि के दाता ।  
अस बर दीन्ह जानकी माता ॥ ३१ ॥

राम-रसायन तुम्हरे पासा ।  
सादर हौ रघुपति के दासा ॥ ३२ ॥

तुम्हरे भजन राम को पावै ।  
जनम जनम के दुख बिसरावै ॥ ३३ ॥

अंत-काल रघुबर-पुर जाई ।  
जहाँ जन्म हरि-भगत कहाई ॥ ३४ ॥

और देवता चित्त न धरई ।  
हनुमत सेइ सर्बसुख करई ॥ ३५ ॥

संकट कटैमितै सब पीरा ।  
जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ॥ ३६ ॥

जय जय जय हनुमान गोसाई ।  
कृपा करहु गुरुदेव की नाई ॥ ३७ ॥

यह सत बार पाठ कर जोई ।  
छूटहिं बंदि महा सुख होई ॥ ३८ ॥

जो यह पढ़ै हनुमान-चलीसा ।  
होय सिद्धि साखी गौरीसा ॥ ३९ ॥

तुलसीदास सदा हरि-चेरा ।  
कीजै नाथ हृदय महँ डेरा ॥ ४० ॥

----- दोहा -----  
पवनतनय संकट-हरन,  
मंगल-मूरति-रूप ।  
राम लखन सीता सहित,  
हृदय बसहु सुर-भूप ॥

सियावर रामचंद्र की जय ।  
पवनसुत हनुमान की जय ।

## **Hanuman Chalisa Meaning in Hindi**

**जय हनुमान ज्ञान गुन सागर ।  
जय कपीस तिहुं लोक उजागर ॥१॥**

*अर्थ:* हे हनुमानजी, ज्ञान और गुणों के सागर, आपको जय हो। हे कपीश, तीनों लोकों में आपका उजागर हो।

**रामदूत अतुलित बलधामा ।  
अंजनि पुत्र पवनसुत नामा ॥२॥**

*अर्थ:* हे राम के दूत, जिनका बल अतुलित है, हे अंजनीपुत्र हनुमान, जिनका नाम पवनसुत है, आपको नमन है।

**महावीर विक्रम बजरंगी ।  
कुमति निवार सुमति के संगी ॥३॥**

*अर्थ:* हे महावीर हनुमान, आपका वीरता सारे लोकों में प्रसिद्ध है। आप कुमति को दूर करने वाले और सुमति के संगी हैं।

**कंचन बरन विराज सुवेसा ।  
कानन कुण्डल कुंचित केसा ॥४॥**

*अर्थ:* हे हनुमान जी, जिनका रूप स्वर्णमय है और जो सुंदर वस्त्रों में आभूषित हैं, आपको नमन है। आपके कानों में कुण्डल और बालों में कुंचित केसा अत्यंत आकर्षक हैं।

**हाथ बज्र अरु ध्वजा बिराजै ।  
काँधे मूँज जनेऊ साजै ॥५॥**

*अर्थ:* हे हनुमान जी, जिनके हाथ में बज्र और ध्वजा हैं, और जिनकी कंधे पर मूँज और जनेऊ है, आपको नमन है।

**शंकर सुवन केसरी नंदन ।  
तेज प्रताप महा जग बंदन ॥६॥**

*अर्थ:* हे हनुमान जी, जो शंकर और केसरी नंदन हैं, और जिनकी तेज प्रताप से पूरा जगत बंदन करता है, आपको नमन है।

**विद्यावान गुणी अति चातुर।  
राम काज करिबे को आतुर ॥७॥**

*अर्थ:* हे हनुमान जी, जो विद्यावान, गुणी, और अत्यंत चातुर हैं, और जो राम के काज में बहुत उत्सुक हैं, आपको नमन है।

**प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया।  
राम लखन सीता मन बसिया ॥८॥**

*अर्थ:* हे हनुमान जी, जो प्रभु राम के चरित्र का सुनने में रसिक हैं, और जिनका मन लखन और सीता में बसा हुआ है, आपको नमन है।

**सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा।  
बिकट रूप धरि लंक जरावा ॥९॥**

*अर्थ:* हे हनुमान जी, जो सीता के साथ सूक्ष्म रूप में प्रकट हुए और जो बिकट रूप में लंका को जलाकर आए, आपको नमन है।

**भीम रूप धरि असुर संहारे।  
रामचंद्र के काज संवारे ॥१०॥**

*अर्थ:* हे हनुमान जी, जो भीम रूप में असुरों का संहार करते हैं, और जो रामचंद्र के काज को संवारते हैं, आपको नमन है।

**लाय सजीवन लखन जियाये।  
श्री रघुबीर हरषि उर लाये ॥११॥**

*अर्थ:* हे हनुमान जी, जो सजीवन लेकर लखन को जीवित करते हैं, और जो श्री रघुबीर को हृदय में हर्षित करते हैं, आपको नमन है।

**रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई।  
तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ॥१२॥**

*अर्थ:* हे हनुमान जी, जिन्होंने रघुपति की बड़ी महिमा की, आपको नमन है, क्योंकि आप मेरे प्रिय भरत के समान हैं।

**सहस्र बदन तुम्हरो यश गावैं।  
अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ॥१३॥**

*अर्थ:* हे हनुमान जी, जिनके सहस्र बदन हैं और जिनका यश गाता है, ऐसा कहकर श्रीराम ने आपको अपने कंठ (गले) में लगाया, आपको नमन है।

**सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा।  
नारद सारद सहित अहीसा ॥१४॥**

*अर्थ:* हे हनुमान जी, जो सनकादि ब्रह्मा आदि मुनियों के सहित नारद और सारद आदि को अपने भक्त बनाते हैं, आपको नमन है।

**यम कुबेर दिगपाल जहाँ ते।  
कवि कोविद कहि सके कहाँ ते ॥१५॥**

*अर्थ:* हे हनुमान जी, जहाँ तक यम, कुबेर, और दिगपाल आदि हैं, वहाँ तक आपका आदर है। कोई कवि या विद्वान आपको कहकर भी सच्चा वर्णन नहीं कर सकता, आपको नमन है।

**तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा।  
राम मिलाय राज पद दीन्हा ॥१६॥**

*अर्थ:* हे हनुमान जी, जिन्होंने सुग्रीव का सहारा किया और उससे राम का मिलाप कराया, उन्होंने उसको राजपद दिया, आपको नमन है।

**तुम्हरो मंत्र बिभीषण माना।  
लंकेस्वर भये सब जग जाना ॥१७॥**

*अर्थ:* हे हनुमान जी, जिनके मंत्र को बिभीषण ने माना, उनसे रावण भी भयभीत हो गया और सारा जगत जान गया, आपको नमन है।

**जुग सहस्र योजन पर भानू।  
लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥१८॥**

*अर्थ:* हे हनुमान जी, जो जुगों और सहस्रों योजनों पर भी चल सकते हैं, उन्होंने सूर्य को अपने मुख में लेकर मधुर फलों को चखा, आपको नमन है।

**प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं।  
जलधि लांघि गए अचरज नाहीं ॥१९॥**

*अर्थ:* हे हनुमान जी, जिन्होंने प्रभु राम की मुद्रिका को मुख में मिला लिया और समुद्र को लांघकर चले गए, वह आपकी अद्वितीय शक्तियों का चमत्कार था, आपको नमन है।

**दुर्गम काज जगत के जेते।  
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥२०॥**

*अर्थ:* हे हनुमान जी, जिनके सामर्थ्य से जगत के सभी कठिन कार्य सुरक्षित हो जाते हैं, उनकी कृपा से सब सुगम हो जाता है, आपको नमन है।

**राम दुआरे तुम रखवारे।  
होत न आज्ञा बिनु पैसारे ॥२१॥**

*अर्थ:* हे हनुमान जी, आप राम के द्वारपाल हैं और आपके बिना राम की कृपा बिना किए कोई भी कार्य संपन्न नहीं होता, आपको नमन है।

**सब सुख लहै तुम्हारी सरना।  
तुम रक्षक काहू को डरना ॥२२॥**

*अर्थ:* हे हनुमान जी, आपकी शरणा से सभी सुख प्राप्त होते हैं और आप ही सबके रक्षक हैं, इसलिए किसी को भी डरने की आवश्यकता नहीं है, आपको नमन है।

**आपन तेज सम्हारो आपै।  
तीनों लोक हांक तें कापै ॥२३॥**

*अर्थ:* हे हनुमान जी, आपने अपनी शक्ति से सम्हार किया है, और तीनों लोकों को हिला दिया है, आपको नमन है।

**भूत पिशाच निकट नहीं आवै।  
महावीर जब नाम सुनावै ॥२४॥**

*अर्थ:* हे महावीर हनुमान जी, जब आपका नाम सुनते हैं, तो भूत, पिशाच और अन्य असुर आपके पास नहीं आते, आपको नमन है।

**नासै रोग हरै सब पीरा।  
जपत निरंतर हनुमत बीरा ॥२५॥**

*अर्थ:* हे हनुमान जी, जिनका ध्यान करने से सभी रोग हर जाते हैं और सभी पीड़ाएं दूर हो जाती हैं, आपको नमन है।

**संकट ते हनुमान छुड़ावै।  
मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ॥२६॥**

*अर्थ:* हे हनुमान जी, जो संकट से ग्रस्त होते हैं, उन्हें आप ही छुड़ाते हैं, जब कोई भक्त आपकी पूजा, मनन, क्रम, और बोले जाने वाले मंत्र का ध्यान करता है, आपको नमन है।

**सब पर राम तपस्वी राजा।  
तिनके काज सकल तुम साजा ॥२७॥**

*अर्थ:* हे हनुमान जी, जो सभी पर राम की तपस्या करने वाले और राजा हैं, उनके सभी कार्यों को आप ही संपन्न करते हैं, आपको नमन है।

**और मनोरथ जो कोई लावै।  
सोइ अमित जीवन फल पावै ॥२८॥**

*अर्थ:* हे हनुमान जी, जो भी मनोरथ लाते हैं, उन्हें अमित जीवन का फल प्राप्त होता है, आपको नमन है।

**चारों जुग परताप तुम्हारा।  
है परसिद्ध जगत उजियारा ॥२९॥**

*अर्थ:* हे हनुमान जी, आपका पराक्रम चारों युगों में प्रसिद्ध है और आप ही जगत को उजियारा करते हैं, आपको नमन है।

**साधु संत के तुम रखवारे।  
असुर निकन्दन राम दुलारे ॥३०॥**

*अर्थ:* हे हनुमान जी, जो साधु-संतों के रक्षक है और जो राम के प्रिय हैं, आपको नमन है।

**अष्ट सिद्धि नव निधि के दाता।  
अस वर दीन जानकी माता ॥३१॥**

*अर्थ:* हे हनुमान जी, जो अष्ट सिद्धियों और नव निधियों के दाता हैं, और जो जानकी माता को वर देते हैं, आपको नमन है।

**राम रसायन तुम्हरे पासा।  
सदा रही रघुपति के दासा ॥३२॥**

*अर्थ:* हे हनुमान जी, जिनके पास राम रसायन है, वे हमेशा रघुपति श्रीराम के दास रहते हैं, आपको नमन है।

**तुम्हरे भजन राम को पावै।  
जनम जनम के दुख बिसरावै ॥३३॥**

*अर्थ:* हे हनुमान जी, जिन्होंने राम के भजन से उन्हें प्राप्त किया है, उन्होंने जन्म-जन्म के दुखों को भूला दिया है, आपको नमन है।

**अन्त काल रघुबर पुर जाई।  
जहाँ जन्म हरि भक्त कहाई ॥३४॥**

*अर्थ:* हे हनुमान जी, जिनका अंतिम समय राघव के नाम में बीता, वह अयोध्या (रघुबर पुर) को प्राप्त होते हैं, वहाँ वह जन्म-जन्म के हरि भक्त कहलाते हैं, आपको नमन है।

**और देवता चित्त न धरई।  
हनुमत सेइ सर्व सुख करई ॥३५॥**

*अर्थ:* हे हनुमान जी, जिनका ध्यान करने से देवता भी अपना मन नहीं रख पाते हैं, वे ही सभी सुखों का करने वाले हैं, आपको नमन है।

**संकट कटै मिटै सब पीरा।  
जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ॥३६॥**

*अर्थ:* हे बलबीर हनुमान जी, जिनकी स्मृति से सभी संकट कट जाते हैं और सभी पीड़ाएं दूर हो जाती हैं, उनको याद करने वाले को आप हमेशा सहायक मिलते हैं, आपको नमन है।

**जय जय जय हनुमान गोसाईं।  
कृपा करहु गुरुदेव की नाई ॥३७॥**

*अर्थ:* हे हनुमान जी, जय हो, जय हो, जय हो, आपको नमन है। कृपा करें, हे गुरुदेव, हम पर अपनी कृपा बनाए रखें।

**जो शत बार पाठ कर कोई।  
छूटहिं बंदि महासुख होई ॥३८॥**

*अर्थ:* हे हनुमान जी, जो कोई शत बार हनुमान चालीसा का पाठ करता है, उसे सभी बंधनों से मुक्ति मिलती है और महासुख प्राप्त होता है, आपको नमन है।

**जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा।  
होय सिद्धि साखी गौरीसा ॥३९॥**

*अर्थ:* हे हनुमान जी, जो इस हनुमान चालीसा को पढ़ता है, उसको सिद्धि और साक्षात गौरीपति शिव की कृपा होती है, आपको नमन है।

**तुलसीदास सदा हरि चेरा।  
कीजै नाथ हृदय महँ डेरा ॥४०॥**

*अर्थ:* हे हनुमान जी, तुलसीदास हमेशा हरि का चिरपिण्ड है, हे नाथ, कृपा करके मेरे हृदय को अपने चरणों में डालें। आपको नमन है।